वर्ष-9 अंक-7, जुलाई 2018

पटना कलम

बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

चिरांद - धरोहर बिहार की

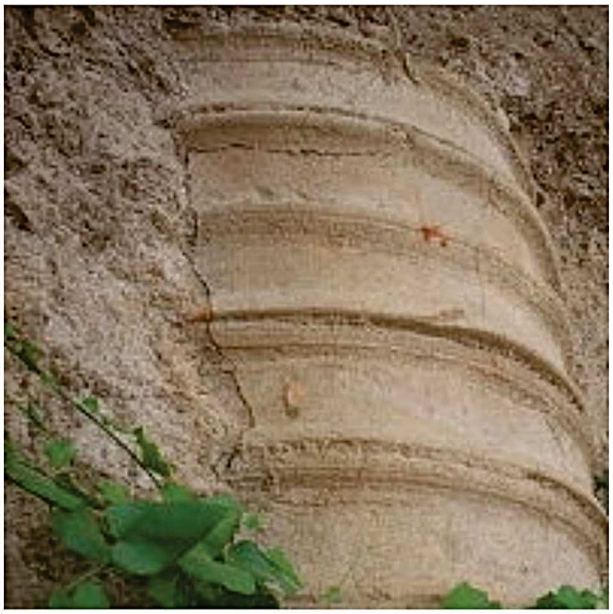

बिहार सदा ही भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के प्रस्फुटन और पल्लवन की आधारभूमि रही है। इसके पुरातात्विक और ऐतिहासिक परिदृश्य में चिरांद एक अति विशिष्ट स्थान रखता है। इस पुरातात्विक स्थल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह पूर्वी भारत के गांगेय नदी-घाटी क्षेत्र में नव पाषाण युगीन संस्कृति का प्रथम और एकमात्र स्थल है। साथ ही यहां पुरा सांस्कृतिक अनेक कालखंडों के सुदीर्घ एवं अखंडित साक्ष्य मिले हैं। इनका विस्तार नवपाषाण(2500 ई.) से पाल काल (1200 ई.) तक है ।

चिरांद गंगा और घाघरा नदी के संगम के निकट स्थित है। यहां पास से ही गंडक नदी की एक उपधारा गंडकी भी गुजरती है। चिरांद के कुछ किलोमीटर पहले सोन भी गंगा में आकर मिलती है। चिरांद की यह भौगोलिक स्थिति इसके इतिहास निर्माण का अनिवार्य तत्व है। यह सारण जिला मुख्यालय छपरा से लगभग 14 किलोमीटर दूर रिविलगंज के डोरीगंज बाजार के निकट दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। राजधानी पटना से इसकी दूरी लगभग 70 किलोमीटर है ।

चिरांद का उत्खनन 1968 ई0 से 1980 ई. के दशकों में कई सत्रों में किया गया। इसके पुरातात्विक महत्व को उजागर करने का प्रमुख श्रेय प्रसिद्ध पुरातत्वविद डॉ भगवती शरण वर्मा को जाता है। प्रसिद्ध इतिहासकार कार्लाइल ने इस स्थल के ऐतिहासिक महत्व के बारे में ब्रिटिश गजेटीयर में लगभग सन 1879-80 में ही लिखा था। बुर्जहोम (कश्मीर) के साथ भारत में यह नव पाषाण काल का प्रथम ज्ञात स्थल है, जिसकी खुदाई से यह पता चलता है कि यह स्थान नवपाषाण काल से ताम्र युग तक लगातार आबाद रहा है। चिरांद स्थित स्तूपनुमा व्यापक और विस्तृत टीले को हिंदू, बौद्ध और मुस्लिम प्रभाव से जोड़कर देखा जाता है। बुर्जहोम को छोड़कर भारत के अन्य किसी भी पुरातात्विक स्थल से इतनी अधिक मात्रा में नवपाषाणकालीन उपकरण नहीं मिले हैं, जितने चिरॉंद गांव से प्राप्त हुए।

सर्वप्रथम प्रारंभिक कृषि का प्रयोग करने वाले लोगों का समूह नवपाषाण काल में यहां आया, जो आखेटक होने के साथ-साथ कृषक और पशुपालक भी था। पत्थर के बने औजार, जिसमें क्षुद्राश्म एवं कुल्हाड़ी भी शामिल हैं, के अतिरिक्त पशु-पक्षियों के अस्थियों से निर्मित औजारों एवं उपकरणों का बड़ी मात्रा में उपयोग यहां की प्रमुख विशेषता थी । यहां से चावल, गेहूं ,जौ, मूंग, मसूर और मटर भी प्राप्त हुए हैं, जो आरंभिक दौर के कृषि कर्म के द्योतक हैं। इसके साथ साथ यहां के लोग आखेट/शिकार के माध्यम से भी अपने भोजन की मांगों को पूरा करते रहे, जिसके प्रमाण यहां से प्राप्त विभिन्न पशु-पक्षियों यथा- गैंडा, हिरन ,भैंस, भेड़, सूअर, कुत्ता , मछली और घोंघा आदि के अस्थि अवशेष मिलने से ज्ञात होते हैं। वस्त्र बुनने, अर्द्ध बहुमूल्य पत्थरों के आभूषण तैयार करने, मिट्टी के बर्तन, खिलौने और मूर्तियों बनाने के भी छिटपुट प्रमाण यहां मिलते हैं। यहां मिले साक्ष्यों के अनुसार यहां की आरंभिक आबादी गोलाकार झोपड़ियों, जो स्थानीय रूप से प्राप्त सरकंडों और मिट्टी से बने घरों में रहती थी । जिनका फर्श जमीन से कुछ नीचे बनाया जाता था । कई ग्राम्य क्षेत्रों में आज भी यह सामान्य है। इतिहासकारों और पुरातत्वविदों का स्पष्ट मानना है कि चिरांद की नवपाषाणिक संस्कृति का विकास स्थानीय तत्त्वों द्वारा हुआ था । तथापि बाहरी स्थलों से इनके मेल-जोल की संभावना और उनके प्रभाव से इनकार नहीं किया जा सकता है ।

चिरांद में ताम्रपाषाणिक एवं कांस्यकालीन कई महत्वपूर्ण साक्ष्य मिलें हैं, जिनमें एक सर्वाधिक रोचक तथ्य यह है कि इस काल में यहां से हमें पशु शवाधान एवं ताबूत के भी साक्ष्य मिले हैं। प्रारंभिक ऐतिहासिक काल (छठी सदी से दूसरी शताब्दी ईसापूर्व) के यहां उत्खनन में काले चमकीले पॉलिश युक्त मृदभांड (NBPW) के अतिरिक्त अच्छी खासी संख्या में लोहे के बने औजार एवं कृषि उपकरण भी प्राप्त हुए हैं। इस कालखंड की संभवत: सर्वाधिक रोचक उत्खनित सामग्री एक दो-तरफा मिट्टी का बना मुखौटा (Mask) है, जिसके एक तरफ पुरुष एवं दूसरी तरफ एक स्त्री का चेहरा बना हुआ है।

शुंग और कुषाण काल (दूसरी सदी ई. पूर्व से तीसरी सदी ई.पूर्व) के निर्माण कार्य विशेषकर स्थाई संरचनाओं में ईट निर्मित इकाइयों की बहुलता स्पष्टतया देखी जा सकती है। इस दौर में चिरांद में धार्मिक और गैर धार्मिक दोनों ही प्रकार की संरचनाएं देखी जाती हैं। इस क्रम में एक मठ जैसी संरचना अधिक महत्वपूर्ण है। साथ ही स्नान घर, शौचालय और सार्वजनिक नालियों जैसी संरचनाएं और सुविधाएं इस काल के विशिष्ट संरचना विधान एवं स्वच्छता के प्रति उच्च प्राथमिकता को दर्शाती है।

वर्तमान में चिरांद की पुरातात्विक धरोहरों को बचाए रखने के लिए और दुनिया के सामने पेश करने के लिए भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण और बिहार सरकार का पुरातत्व निदेशालय प्रयासरत है। यहां एक संग्रहालय का निर्माण भी किया जा रहा है, जिसमें कालबद्ध ढंग से पुरातात्विक साक्ष्यों को प्रदर्शित किया जाएगा। स्थानीय लोगों द्वारा चिरांद टीले को द्वापर युग में कृष्ण भक्त स्थानीय राजा मयूरध्वज के किले का अवशेष और च्यवन ऋषि का आश्रम भी माना जाता है। इनकी याद में प्रत्येक वर्ष यहां च्यवन ऋषि के आश्रम में प्रसिद्ध कार्तिक मेला (अक्टूबर-नवंबर माह में) आयोजित किया जाता है।

● अविनाश कुमार झा

वर्ष - 9, अंक-7, जुलाई 2018
पटना कलम
बिहार के सांस्कृतिक परिदृश्य का साक्षी

संरक्षक
कृष्ण कुमार ऋषि

प्रधान संपादक
चैतन्य प्रसाद

संपादक
विनोद अनुपम

संपादकीय संपर्क
निदेशक
सांस्कृतिक कार्य निदेशालय
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार
विकास भवन, बेली रोड, पटना
email :culturebihar@gmail.com
vinod.anupam63@gmail.com

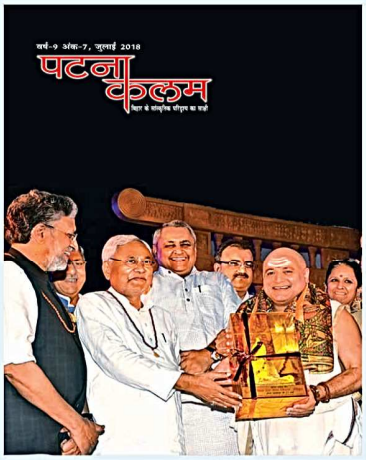

प्रधान सम्पादक की कलम से ...

विश्व संगीत दिवस के अवसर पर सभी संगीत प्रेमियों और संगीत की परंपरा को दिन व दिन सशक्त बनाने वाले समर्पित गायकों-वादकों को हार्दिक शुभकामनाएं। विश्व संगीत दिवस मूलत: 'फेटे डी ला म्यूजिक' (Fête de la Musique) के नाम से जाना जाता है। इसका अर्थ है म्यूजिक फेस्टिवल, संगीत महोत्सव। इसकी शुरुआत 1982 में फ्रांस में हुई। विश्व में शांति के संदेश के साथ फ्रांस में पहली बार 21 जून सन् 1982 में प्रथम विश्व संगीत दिवस मनाया गया। इससे पूर्व अमेरिका के एक संगीतकार योएल कोहेन ने 1976 में इस दिवस को मनाने की बात की थी। उल्लेखनीय है कि विश्व संगीत दिवस कुल 17 देशों में ही मनाया जाता है इसमें भारत, आस्ट्रेलिया, बेल्जियम, ब्रिटेन, लक्समवर्ग, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, कोस्टारीका, इजाराइल, चीन, लेबनान, मलेशिया, मोरक्को, पाकिस्तान, फिलीपींस, रोमानिया और कोलम्बिया शामिल हैं। यह एक तरह से संगीत त्यौहार है जिसे सारे देश में अलग-अलग तरीकों से मनाया जाता है। हमें खुशी है बिहार भी विश्व संगीत दिवस की परंपरा का एक अभिन्न अंग रहा है।

संगीत सिर्फ सात सुरों का संयोजन नहीं होता। भाषा और शब्द से पर यह पूरे विश्व को भी एक सूत्र में संयोजित करता है। आश्चर्य नहीं कि भारत-पाकिस्तान के राजनीतिक विभाजन भले ही हो गए हों, संगीत उन्हें आज भी एक सूत्र में जोड़ता है। पंजाबी के शब्द हम भले ही नहीं समझ पाते हों, वहां के संगीत की तेज गति पर बगैर थिरके हम नहीं रह सकते। उत्तर-दक्षिण पूरब-पश्चिम देश और दुनिया के हर कोने को बांधने वाला सबसे सशक्त सूत्र है संगीत। संगीत दुनिया में हर मर्ज की दवा मानी जाती है। यह दुखी से दुखी इंसान को भी खुश कर देती है। अब तो विज्ञान ने यह भी प्रमाणित किया है कि संगीत का साकारात्मक प्रभाव मानव के साथ जीव जगत भी समान रूप से पड़ता है। वास्तव में संगीत दुनिया में हर जगह है। अगर इसे महसूस करें तो दैनिक जीवन में संगीत ही संगीत भरा है कोयल की कूक, पानी की कलकल, हवा की सरसराहट हर जगह संगीत ही तो है! बस जरूरत है तो इसे महसूस करने की। अपनी जिंदगी के व्यस्त समय से कुछ पल सुकून के निकालिए और महसूस कीजिए इस संगीतमय दुनिया की धुन को। संगीत मानव जगत को ईश्वर का एक अनुपम दैवीय वरदान है। हमें संतोष है कि विश्व के साथ पटना में भी प्रेमचंद रंगशाला सहित कई पार्कों में भी संगीत संध्या का खुला आयोजन कर हमने आमजन को संगीत से जोड़ने की सार्थक कोशिश की।

जून सक्रियता का माह माना जाता है। यही वह समय है जब सबसे लंबे दिन हमें मिलते हैं। हम अधिक से अधिक काम कर पाते हैं। लंबे दिनों के साथ क्रियता का यही संदेश 'विश्व योग दिवस' भी लेकर आता है। हमें हर्ष है कि योग के माध्यम से आज भारत को एक बार फिर 'विश्व गुरु' माना जा रहा है। कह सकते हैं जून का समेकित संदेश है- स्वस्थ रहें, संगीतमय रहें।

आप सबको शुभकामनाएं

चैतन्य प्रसाद

(चैतन्य प्रसाद)
प्रधान सचिव
कला, संस्कृति एवं युवा विभाग, बिहार

मंच पर साकार हुई चाणक्य नीति

मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने कहा कि राज्य में 'चाणक्य' से जुड़े सभी स्थलों का विकास किया जाएगा। श्रीकृष्ण मेमोरियल हॉल में आयोजित नाटक 'चाणक्य' के मंचन के बाद मुख्यमंत्री ने राज्य के अधिकारियों को कलाकारों और विशेषज्ञों से बात कर आवश्यक कार्रवाई करने का आदेश दिया। उन्होंने कहा कि पाटलिपुत्र ऐतिहासिक धरती है। यहां पुरातात्विक महत्व के कई स्थल हैं। सरकार उसके विकास का प्रयास कर रही है। मुझे इस नाटक को दूसरी बार देखने का मौका मिला है। मैं इस नाटक की पूरी टीम को शानदार प्रस्तुति के लिए आभार व्यक्त करता हूं। मुख्यमंत्री ने नाटक के सभी कलाकारों को अंगवस्त्र और प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया।

रंगमंच पर हजारों वर्ष पहले का ऐतिहासिक क्षण उस समय जीवंत हो गया, जब चाणक्य नाटक के मंचन के दौरान चंद्रगुप्त को राजधर्म की शिक्षा मिली। नाटक में दिखाया गया है कि देश में फैली अराजकता से निपटने के लिए सक्षम, सदाचारी और प्रजाप्रेमी राजा का होना जरूरी है। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए दंभी और अन्यायी राजा से चाणक्य टकरा जाता है। अत्याचारी राजसत्ता को खत्म कर अखंड भारत का निर्माण करता है। नाटक का संदेश है कि इरादे पक्के और कूटनीतिक प्रयास हों तो लक्ष्य प्राप्त करना मुश्किल नहीं। नाटक की प्रस्तुति जाने-माने अभिनेता मनोज जोशी एवं उनकी टीम ने दी। नाटक के लेखक थे मिहिर भूटो,जबकि निर्देशन मनोज जोशी का था।

नाटक के प्रत्येक संवाद में देशप्रेम छलक रहा था। सबसे बड़ी नीति देश की हिफाजत है। राष्ट्र से अधिक महत्व की कोई नीति नहीं होती है...राजपुत्र होते हुए यदि प्रजा की अश्रु नहीं पोछ पाए तो धिक्कार है राजपुत्र होने पर...राष्ट्र और उन्नति के मार्ग में यदि धर्म बाधक है, तो वह धर्म नहीं है...। अगर सगोत्र नरपिशाच हो तो उसकी हत्या करना कहीं से पाप नहीं होता...महाभारत युद्ध में बड़े-बड़े योद्धा छल से मारे गए...लेकिन वह धर्म युद्ध था...इस तरह के शानदार संवाद पर बार-बार तालियां बज रही थीं। विपत्ति में राजा को प्रजा की सुरक्षा के लिए परेशानियों का डटकर मुकाबला करना होता है। नंद वंश को खत्म कर अखंड भारत के निर्माण का संकल्प ले चुके चाणक्य के लिए यह कठिन पल था, लेकिन वह डिगे नहीं। चाणक्य के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्षण आया जब प्रेयसी की मौत पर चंद्रगुप्त विचलित नजर आया। अखंड भारत की प्रतिज्ञा ले चुके चाणक्य के लिए यह कठिन पल था, लेकिन वह डिगे नहीं। चंद्रगुप्त को राजधर्म का ज्ञान दिया। चेतावनी भी कि अगर देश को एक सूत्र में बांधने के लक्ष्य से तुम डिगे तो तुम्हारे विनाश से भी पीछे नहीं हटूंगा।

नाटक में चाणक्य ने कई उपदेश दिए हैं। राजा अगर वीर न हो तो वह मृतक समान है। राजा होना सुखी होने का मार्ग नहीं है। आमात्य को लेकर चेताया कि महान संत से दोस्ती और दुश्मनी ठीक नहीं होती है। देश के निर्माण में सत्य असत्य के चक्कर में पड़े आमात्य को चाणक्य ने बताया कि सत्य कभी राजद्रोही नहीं होता। राजा जरूर सत्यद्रोही हो सकता है। वहीं चंद्रगुप्त जब अपने सौतेले भाई के खिलाफ विद्रोह को लेकर असमंजस में पड़ा तो चाणक्य ने कहा कि पिता के मान, धन और धर्म की रक्षा करना पुत्र का कर्तव्य है।

नाटक की प्रस्तुति लाजवाब थी। एक ऐतिहासिक नाटक को पूरी गरिमा के साथ मंच पर उतारा गया। वस्त्र से लेकर, मंचीय परिकल्पना तक देशकाल के अनुरूप। ऊपर से कलाकारों का अभिनय भी शानदार। चाणक्य बने मनोज जोशी हो या अन्य कलाकार, सभी ने अपने चरत्रि को लाजवाब बनाया। जो गंभीरता दिखनी चाहिए थी, वह गंभीरता दिखी।

महत्वपूर्ण यह कि 'चाणक्य' के प्रदर्शन के अवसर पर बिहार की राजनीति के तमाम दिग्गज उपस्थित रहे। इस अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के साथ उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, विधानसभाध्यक्ष विजय कुमार चौधरी, केंद्रीय मंत्री रामकृपाल यादव, बिहार सरकार के मंत्री नंद किशोर यादव, डॉ. प्रेम कुमार, राम नारायण मंडल, मंगल पांडेय, राणा रणधीर सिंह, भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष नित्यानंद राय, महामंत्री नागेंद्र, विधायक संजीव चौरसिया, देवेश चंद्र ठाकुर, संजय सिंह, मेयर सीता साहू, मुख्यमंत्री के सलाहकार अंजनी कुमार सिंह, प्रधान सचिव चंचल कुमार, मनीष कुमार वर्मा डीएम कुमार रवि और आयोजक दिव्य प्रेम सेवा मिशन के

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस(21 जून)

योग ने विश्व को दिया विश्वबंधुत्व व शांति का संदेश

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस(21 जून) के अवसर पर कला-संस्कृति एवं युवा विभाग के द्वारा पाटलिपुत्र स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में भव्य सामूहिक योगाभ्यास का आयोजन किया गया था। जिसका उद्घाटन राज्यपाल महामहीम सत्यप्रकाश मलिक के द्वारा किया गया। योग शिविर में केंद्रीय मंत्री रविशंकर प्रसाद, सांसद रामकृपाल यादव, उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी, स्वास्थ्य मंत्री मंगल पांडेय, कला एवं संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि, कृषि मंत्री प्रेम कुमार, मेयर सीता साहू, कुम्हरार विधायक अरुण कुमार सिन्हा, दीघा विधायक संजीव चौरसिया, प्रदेश भाजपा के संगठन मंत्री श्री नागेन्द्र जी समेत कई विभागों के अधिकारी उपस्थित हुए।

इस अवसर पर राज्यपाल सत्य पाल मलिक ने कहा कि भारत ने पूरी दुनिया को प्राचीन काल से ही ज्ञान प्रदान किया है। आधुनिक भारत ने भी योग के माध्यम से विश्वबंधुत्व व शांति का संदेश दिया है। राज्यपाल ने कहा कि भारतवर्ष ने योग की अपनी पुरातन परम्परा को विश्व के 150 से भी अधिक देशों में फैलाकर सम्पूर्ण विश्व को सुखी, स्वस्थ और कल्याणकारी बनाने की एक ऐतिहासिक और सार्थक पहल की है। राज्यपाल ने कहा कि भगवान शिव और भगवान कृष्ण को 'योगीराज' भी कहा जाता है। महर्षि पतंजलि, गुरु गोरखनाथ, घोषाल, भगवान बुद्ध जैसे ऋषियों-महर्षियों ने भारतीय योग की परंपरा को समृद्ध किया है। योग रोगमुक्त और तनावमुक्त तो करता ही है, यह कुशल जीवनयापन की अद्भुत शैली भी है। राज्यपाल ने कहा कि योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यू.एन.ओ. से मान्यता दिलाने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अग्रणी भूमिका रही है। इससे भारत की प्रतिष्ठा दुनियाभर में बढ़ी है। मैं सभी से अपील करता हूं कि जीवन को स्वस्थ एवं संतुलित बनाए रखने के लिए योग को अपनाएं तथा दूसरे को भी इसे अपनाने के लिए प्रेरित करें।

इस अवसर पर उद्घाटन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए केन्द्रीय विधि एवं न्याय तथा संचार व सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री, श्री रविशंकर प्रसाद ने कहा कि भारत की समृद्ध परम्परा, संस्कृति और संस्कारों का समाहार योग में मिलता है। उन्होंने कहा कि हमारी संस्कृति सम्पूर्ण विश्व को भाईचारे में जोड़नेवाली है और 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' को पूरी दुनियाँ में मनाये जाने की यू.एन.ओ. की घोषणा हमारी सांस्कृतिक विरासत का विजय-घोष है। श्री प्रसाद ने कहा कि आज पूरा विश्व योग को अपना चुकी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कोशिश ने योग को जन आंदोलन बना दिया है।

उपमुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर संयुक्त राष्ट्र संगठन द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया गया है। योग विश्व को भारत की अमूल्य देन है। भारत की संस्कृति संपूर्ण विश्व को भाईचारा से जोड़ने वाली है। यह जीवन जीने की कला है। श्री मोदी ने कहा कि योग से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शांति मिलती है। यह ज्ञान, कर्म और भक्ति का अद्भुत समन्वय है।

इस अवसर पर कला संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि योग इस दुनिया को भारत की ओर से दिया गया एक ऐसा उपहार है जो जीवन को एक नई दिशा प्रदान करता है। जीवन में चाहे कितनी भी परेशानियां क्यों ना हों, योग उन्हें काफी हद तक कम कर देता है। साल 2015 में पहली बार इसे अतंर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया गया और दुनियाभर में लोगों ने योग के फायदे को जाना। इसे 21 जून को इसलिए मनाया जाता है क्योंकि यह दिन साल का सबसे लंबा दिन होता है और योग भी सबको लंबी आयु देता है।

योग शिविर में आर्ट ऑफ लिविंग के योग गुरु स्वामी वैशम्पायन ने स्टेडियम हजारों लोगों को योग के विभिन्न आसनों को कराया। शिविर में नेहरू युवा केंद्र, गायत्री परिवार सहित अन्य संस्थानों के प्रतिनिधि, सरकारी व निजी स्कूलों के छात्र-छात्राएं भी शामिल हुए।

पटना म्यूजियम की महामहिम ने की भूरि भूरि प्रशंसा

महामहिम राज्यपाल ने पटना म्यूजियम का परिभ्रमण किया एवं यहाँ उन्होंने 'महात्मा गाँधी और चम्पारण विषयक विशेष प्रदर्शनी के साथ अन्य दीर्घाओं का अवलोकन करते हुए यहाँ संग्रहित विभिन्न ऐतिहासिक-पुरातात्विक प्रदर्शों को देखा। 1917 में स्थापित पटना म्यूजियम की राज्यपाल ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

महामहिम राज्यपाल ने कहा कि पटना म्यूजियम की संग्रहालयों की दुनियाँ में काफी प्रतिष्ठा है एवं यहाँ संग्रहित सभी ऐतिहासिक पुरातात्विक वस्तुएँ बिहार की गौरवमय दुर्लभ ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों का परिचय देती हैं। राज्यपाल ने आगन्तुक पंजी में लिखा कि- ''इसे 'mother of all museums of Bihar कह सकते हैं।'' उन्होंने कहा कि संग्रहालय में सभी वस्तुओं का संधारण अत्यन्त सफाई और करीने से किया गया है तथा सभी संग्रहित प्रदर्शों के बारे में बेहतर रूप में सूचनाएँ अंकित हैं। उन्होंने यहाँ के तकनीकी सहायकों, शोधकर्त्ताओं एवं संग्रहालयाध्यक्ष की भी सराहना की।

संग्रहालयाध्यक्ष ने संग्रहालय परिभ्रमण के दौरान राज्यपाल को 1930 में स्थापित 'प्राकृतिक इतिहास दीर्घा' दिखाते हुए कहा कि इसमें विलुप्त हो रहे पशु-पक्षियों की कई प्रजातियों की सच्ची प्रतिकृतियाँ संग्रहित हैं। बाघ, चीता, ग्राह, बैल आदि की सच्ची प्रतिकृतियाँ यहाँ उपलब्ध हैं। भूगर्भ दीर्घा में राज्यपाल को लकड़ी से पत्थर बन गए जीवाश्म वृक्ष एवं अन्य खनिजों को भी दिखाया गया।

संग्रहालय में राज्यपाल ने 'बुद्ध अस्थिकलश दीर्घा' भी देखी, साथ ही पं. राहुल सांकृत्यायन द्वारा तिब्बत से लाये गए कई बौद्ध-साहित्य का भी उन्होंने अवलोकन किया। कई बौद्ध-ग्रंथों की पांडुलिपियाँ तथा 'बज्रयान' से प्रभावित नेपाली कांस्य कलाकृतियाँ भी राज्यपाल को यहाँ दिखाई गई। 'कला दीर्घा' में अष्टधातु की कई कलाकृतियाँ, हाथी-दाँत की वस्तुएँ, सीवान के मिट्टी-वर्त्तन, बेल्जियम के हुक्कावेश आदि भी राज्यपाल ने देखे। पेंटिंग दीर्घा में अजन्ता, पारसी, मुगल, राजस्थानी पेंटिंग एवं पटना कलम की भी पेंटिंग राज्यपाल श्री मलिक को दिखाई गई।

पटना संग्रहालय में संग्रहित प्रथम विश्वयुद्ध के समय की बंदूकों तथा मुगल काल के सैनिकों के युद्ध-परिधानों को देखने में भी राज्यपाल ने अभिरूचि ली।

राज्यपाल ने डॉ. राजेन्द्र प्रसाद दीर्घा में राष्ट्रपति काल के दौरान राजेन्द्र बाबू को मिली विभिन्न देशी-विदेशी उपहार-सामग्रियों को देखा। उन्होंने डेनियल दीर्घा में भारत के प्राचीन भवनों की प्रतिकृतियों को भी देखा।

प्रथम गणराज्य का राज्यपाल ने किया परिभ्रमण

महामहिम राज्यपाल श्री मलिक ने वैशाली जिले के विभिन्न ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों आदि का परिभ्रमण किया। राज्यपाल श्री मलिक ने बुद्ध रैलिक स्तूप, अभिषेक पुष्करणी सरोवर, विश्व शांति स्तूप, कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर) के वैशाली स्तंभ, प्राकृत जैन शोध संस्थान, बासोकुंड जैन मंदिर आदि स्थलों का परिभ्रमण कर पटना लौटने के बाद उन्होंने बताया कि वैशाली एवं मुजफ्फरपुर के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थल अत्यन्त भव्य और दिव्य हैं। उन्होंने कहा कि इन ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक स्थलों को पूर्ण रूप से विकसित किया जाना जरूरी है तथा यहाँ पर्यटकीय सुविधाओं एवं सड़क-सम्पर्कता को और अधिक सुदृढ़ किया जाना आवश्यक है।

राज्यपाल श्री मलिक ने कहा कि वैशाली एवं मुजफ्फरपुर के इन स्थलों को पूर्ण विकसित कर विदेशी पर्यटकों के लिए भी आकर्षण पैदा किया जा सकता है। राज्यपाल ने कहा कि वैशाली में महात्मा बुद्ध ने निवास किया था और उनसे जुड़ी कई गाथाएँ भी प्रचलित हैं। राज्यपाल ने कहा कि विश्व में प्रथम गणतंत्र के रूप में विख्यात वैशाली की धरती के कण-कण में भगवान बुद्ध और महावीर स्वामी के संदेश और दर्शन परिव्याप्त हैं।

राज्यपाल ने कहा कि प्राकृत जैन शोध संस्थान को भी और अधिक विकसित किया जाना चाहिए ताकि भगवान महावीर के संदेशों के विभिन्न आयामों से आज युवा पीढ़ी भी लोग लाभान्वित हो सके। उन्होंने बताया कि पिछले दिनों इस शोध-संस्थान की गतिविधियों की समीक्षा हेतु राजभवन में एक उच्चस्तरीय बैठक हुई थी। श्री मलिक ने कहा कि यहाँ का पुस्तकालय समृद्ध एवं प्रेरणादायी है। उन्होंने कहा कि इस संस्थान को विकसित करने के लिए हरसंभव प्रयास किए जाएँगे।

विश्व संगीत दिवस

सूफियाना संगीत से झूमा समां

एक से बढ़कर एक कलाकारों की प्रस्तुति, गानों के अनमोल व अनूठे बोल तथा सामने बैठे झूमते दर्शक। गीत व संगीत का यह दृश्य देखने को मिला प्रेमचंद रंगशाला में, जहां विश्व संगीत दिवस के अवसर पर कई कलाकारों ने अपनी प्रतिभा के कई रंगों को बिखेरा। सुर और संगीत का इस आयोजन की कुछ इस कदर खुमारी चढ़ी कि लोगों ने हर प्रस्तुति पर कलाकारों का उत्साह बढ़ाया। इस मौके पर कला, संस्कृति व युवा विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि, विभाग के प्रधान सचिव रवि परमार के अलावा बड़ी संख्या में दर्शक, रंगकर्मी उपस्थित थे। कार्यक्रम को कला, संस्कृति व युवा विभाग तथा बिहार संगीत नाटक अकादमी द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

इससे पहले कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए कृष्ण कुमार ऋषि ने कहा कि पूरे संसार में संगीत दिवस का कार्यक्रम व सभा का आयोजन हो रहा है। इसी कड़ी में राज्य सरकार इसमें अपनी उपस्थिति को दर्ज कर रही है और कलाकारों का उत्साहवर्धन कर रही है। आयोजन में 14 कलाकारों ने गीत-संगीत की विभिन्न विद्याओं को लोगों के सामने पेश किया। कार्यक्रम की शुरुआत मंगल ध्वनि से हुई जिसमें अपनी प्रस्तुति देते हुए मो शरफुद्दीन ने बांसुरी पर सुमधुर तान छेड़ते हुए भगवती गीत को सुनाया। उनकी इस प्रस्तुति ने लोगों को झूमने पर मजबूर कर दिया। इसके बाद अगली प्रस्तुति देते हुए उन्होंने बांसुरी पर ही भोजपुरी में भिखारी ठाकुर तथा मैथिली में विद्यापति की रचना को बांसुरी के द्वारा प्रस्तुत किया। इस पूरे प्रस्तुति के दौरान लोग अपनी जगहों पर जमे रहे। शरफुद्दीन का साथ नाल पर अर्जुन चौधरी तथा झंझरी पर ऋषिराज ने साथ दिया।

आयोजन का मुख्य आकर्षण ओमान से आयी वंदना ज्योतिर्मयी का सूफी गायन रहा। अपनी हर प्रस्तुति में उन्होंने अपने गायन को इस तरह से प्रस्तुत किया कि सुनने वाले वाह-वाह करने से खुद को नहीं रोक सके। उनकी हर एक प्रस्तुति पर लोगों ने दिल खोलकर तालियां बजायी। अपनी प्रस्तुति में सबसे पहले उन्होंने मैं नारा ए मस्ताना, मैं शोखी ए रिंदाना... को पेश किया। इस गाने की सुर, लय व ताल कुछ इस कदर की रही कि सुनने वाले जैसे खो से गये। इसके बाद अगली प्रस्तुति देते हुए उन्होंने 'ओ सईयां, चलो रे ओ सईयां' तथा 'लज्जते गम बढ़ा दीजिए, आप फिर मुस्कुरा दीजिए' को भी बेहतरीन तरीके से पेश किया। इन गीतों पर उनका साथ गिटार पर आर संगम, तबला पर भरचारी तथा कीबोर्ड पर सुधीर सिन्हा ने दिया। अन्य कलाकारों ने भी झुमाया।

कार्यक्रम में अपनी प्रस्तुति देते हुए सत्येंद्र संगीत ने मैथिली गीत से अपना आगाज किया। इसके तहत उन्होंने एहन सुंदर मिथिला धाम, दोसर पाएब कौने ठाम, दुल्हा-दुल्हिन सीता राम जनकपुर में को प्रस्तुत किया। इस गाने के साथ ही पूरा माहौल झूमने को मजबूर हो गया। अपनी अगली प्रस्तुति देते हुए उन्होंने भोजपुरी में ले ले अइहे बालम बजरिया से चुनरी, लुक छिप बदरा में चमके जइसे चनवा, मोरा मुख दमके को भी बेहतर तरीके से प्रस्तुत किया। सत्येंद्र संगीत की प्रस्तुति का सबसे शानदार आकर्षण बिहार गीत बाल्मीकि ने रची रामायण रहा। हर भाषा में प्रस्तुत हुए गीत आयोजन की कड़ी को आगे बढ़ाते हुए अमर आनंद ने दर्शकों के सामने अपनी गायन प्रतिभा को बखूबी पेश किया। अपने प्रस्तुति देते हुए उन्होंने पहले जग में जहवां उगे किरनिया, उगे सुरुज भगवान रे, टिकुलिया मारे जान रे को पेश किया। इसके बाद उन्होंने विद्यापति गीत गे माई चंद्रमुखी स गौरी हमर छवि तथा भिखारी ठाकुर द्वारा रचित पिया गइले कलकतवा को पेश किया।

कार्यक्रम में अपनी गायन प्रतिभा को प्रदर्शित करते हुए रानी सिंह ने ऊं नमः शिवाय से अपना आगाज किया। इसके बाद उन्होंने रोज जब आफताब ढ़लते हैं, तेरी यादों के दिये जलते हैं को मखमली आवाज में सलीके से पेश किया। इसके बाद उन्होंने लोकगीत में 'गोरे-गोरे सांवर-सांवर, उमर में बराबर हाय रे पियवा' को गाया। इसी क्रम में अपनी प्रस्तुति देते हुए मुन्नी कुमारी ने पहले झूमर पेश करते हुए 'कार्तिक मासे न आकाश से बदरी' को गाया। इसके बाद कजरी के रूप में कजरी नेवती लगली बदरी त बदरी अईली नगरी और मड़वा गीत में आजु जनकपुर में मड़वा बड़ा सुहावन को सुनाया। जबकि रौशन कुमारी ने लोकगीत में 'ले चल पटना बाजार, जिय ना लागे घरवा' तथा 'दुपहरिया बिताएला ना पिया, दुपहरिया बिताएला ना पिया' को भी गाया।आयोजन में अरुणिमा गुप्ता, अंबिका कुमारी, राजीव रंजन के अलावा कई अन्य कलाकारों ने अपनी प्रस्तुति दी।

● सुजीत श्रीवास्तव

किन्नर महोत्सव

किन्नर समाज को मुख्यधारा में लाने की कोशिश

ज्ञान भवन में राज्य स्तरीय किन्नर महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें बिहार समेत देश के विभिन्न हिस्सों से आई किन्नरों ने गीत, संगीत पर नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी। अपनी प्रस्तुति से उन्होंने साबित कर दिया कि उनमें प्रतिभा की कमी नहीं है जरूरत है तो बस मौका मिलने का। कार्यक्रम का आयोजन कला संस्कृति एवं युवा विभाग और जिला प्रशासन पटना की ओर से किया गया था।

कार्यक्रम का उद्घाटन कला संस्कृति विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने किया। वहीं विशिष्ट अतिथि विभाग के प्रधान सचिव रवि परमार, किन्नर अखाड़ा, उज्जैन की संस्थापक अध्यक्ष महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी, मुम्बई से आई ट्रांसजेंडर एक्टिविस्ट गौरी सावंत थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कला संस्कृति विभाग में सांस्कृतिक निदेशक मीना कुमारी ने की।

कार्यक्रम के दौरान कला, संस्कृति एवं युवा मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने दूसरे राज्यों से आए किन्नर लोगों का स्वागत किया। साथ ही उन्होंने कहा कि समाज का नजरअंदाज ने ही कभी इस समाज को आगे नहीं बढ़ने दिया। बिहार सरकार अपने प्रयास से इन्हें हर एक मंच देना चाहती हैं, जहां से इस समाज का राजनैतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास संभव हो सके।

इस अवसर पर मौजूद पटना जिलाधिकारी कुमार रवि ने कहा कि बिहार ही एक ऐसा राज्य हैं, जहां किन्नर समाज को खुले मंच प्रदान करने के लिए सरकार तत्पर है। उन्होंने कहा कि जो समाज पहले इनके नाम से दूर रहना चाहता था। वर्तमान में सभागार की भीड़ बता रही हैं कि बदलाव हो चुका हैं, समाज इन्हें स्वीकार कर लिया हैं। इस दौरान किन्नर की अध्यक्ष तथा लक्ष्मी त्रिपाठी ने कहा कि सरकार के इस प्रयास से पूरा समाज खुश हैं। कुछ कमी अभी भी है, जिसे दूर करने के लिए सरकार को बहुत जल्दी सुविधाएं देनी होगी। लक्ष्मी त्रिपाठी ने सरकार से मांग की कि किन्नर में भी कला के विविध नमूने हैं। जैसे कि लोक कव्वाली के मामले में बिहार के किन्नर सबसे आगे हैं। ऐसी कला को संरक्षित रखने के लिए बिहार सरकार को कुछ उपाय करने की जरूरत हैं। दर्शकों की तालियों की आवाज सुन कर ट्रांसजेंडर एक्टिविस्ट गौरी सावंत ने कहा कि तालियों से हमारे पुराने रिश्ते हैं। उन्होंने कहा कि आपके और हमारे तालियों की पहचान अलग-अलग क्यों हैं। यह भी सोच रखना चाहिए कि तालियां एक हो, चाहे आपकी हो या हमारी। साथ ही कहा कि प्राथमिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में पुलिंग तथा स्त्रीलिंग के साथ नपुंसकलिंग भी शामिल किया जाए। ताकि बच्चे किन्नर न समझ एक इंसान समझने की कोशिश करें। कार्यक्रम का नेतृत्व रेशमा ने किया, जहां समाज में अपनी पहचान के लिए लड़ रहे। किन्नर कम्यूनिटी ने महोत्सव को काफी सराहा।

इसमें देश के अलग-अलग राज्यों से आए किन्नर कलाकार अपनी कला से सभी को अचंभित कर दिया। किन्नरों ने एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। सांस्कृतिक प्रस्तुति की शुरूआत स्वागत गीत से पर आधारित नृत्य से हुई। इसके बाद पश्चिम बंगाल से आए रूद्र पलास ग्रुप की ओर से नृत्य की प्रस्तुति हुई। बिहार के दोस्ताना सफर ग्रुप की ओर से पारंपरिक बधाई गीत पर प्रस्तुति दी गई। महाराष्ट्र से आए ड्रीम गर्ल ग्रुप ने लावणी नृत्य पेश कर खूब तारीफे बटोरी। दिल्ली से आए राधाकृष्ण ग्रुप ने रक्त बीज नाम की नृत्य नाटिका पेश कर मां दुर्गा की महिमा बताई। अंत में बिहार की गौरी लक्ष्मी ने शानदार प्रस्तुति से कार्यक्रम को यादगार बना दिया। कार्यक्रम के आयोजन से जुड़ी दोस्ताना सफर की रेशमा प्रसाद ने कहा कि किन्नर महोत्सव का आयोजन किन्नर समाज की लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने का मंच देने के लिए किया गया है।

रंगयात्रा में मंच पर छाए लोकरंग

कला-संस्कृति विभाग और बिहार संगीत नाटक अकादमी की ओर से भारतीय नृत्य कला मंदिर में आयोजित चार दिवसीय रंगयात्रा श्रंखला की शुरुआत फणीश्वरनाथ रेणु की 'लाल पान की बेगम' की मंचन के साथ हुई। प्रस्तुति पटना के बैनर तले शारदा सिंह के निर्देशन में इसका मंचन किया गया था। नाटक में दिखाया गया कि स्त्रियां भी अपनी जिंदगी को अपनी शर्तों पर जीना चाहती हैं। स्त्री अस्मिता पर केंद्रित इस नाटक की कहानी एक बैलगाड़ी के इर्द-गिर्द घूमती है जिसमें बैठकर बिरजू की मां को नाच देखने जाना होता है। नाटक में शारदा सिंह, सुमन कुमार, गौतमी शर्मा, नंदकिशोर, रूबी खातून, विनिता सिंह, साधना, इमरान, मो. आसिफ आदि ने शानदार अभिनय किया।

रंगयात्रा के दूसरे दिन महेंद्र मलगिया लिखित एवं कुमार गगन के निर्देशन में मैथिली नाटक 'काठक लोक' की प्रस्तुति भंगिमा नाट्य संस्था की ओर से की गई। गांव के लोग बाबा के पास अपने दुखों को लेकर पहुंचते हैं। कठरी बाबा सभी के दुखों को समझते हुए अंधविश्वास से दूर रहने के साथ सत्य की ओर अग्रसर होने का संदेश देता है। लोगों को सत्य से रू-ब-रू कराने में बाबा को काफी संघर्ष करना पड़ता है। काफी संघर्ष करने के बाद सत्य की जीत होती है। डिहबार के पास गांव के लोग आते हैं और कर्म-कुकर्म का गवाह पीपल को बनाते हैं। उमाकांत झा,अंतेश झा, पूनम श्री, संजीव पांडेय, रंजन ठाकुर, विक्की, कुमार गगन,निखिल शर्मा,निशांत कुमार झा ने अपने अभिनय से प्रस्तुति को बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोडी।

नाटक का गीत 'गाम-गाम में नगर-नगर म खाल ओढ़ि क हाल पुछइए... चारों ओरि नाच रहल बैताल...' व्यवस्था पर प्रहार करता है। साधु (उमाकांत झा) आते हैं और अच्छाई का मुखौटा पहने लोगों का नकाब उतारते हैं। वो बताते हैं कि साजिश, अत्याचार और आतंक कभी सच को नहीं दबा सकता।

तीसरे दिन प्रांगण नाट्य संस्था की ओर से अरुण सिन्हा लिखित एवं वरिष्ठ रंगकर्मी अभय सिन्हा के निर्देशन में 'फूल नौटंकी विलास' का मंचन किया गया। नौटंकी शैली में हुई प्रस्तुति में प्यार की जीत को दिखाया गया। नट-नटी संवाद से शुरुआत हुई और गड़बड़िया (ओमप्रकाश) के शानदार नृत्य के साथ कारवां आगे बढ़ा। फिर फूल सिंह और राजा हरिसिंह की बेटी के जीवन पर केंद्रित कथा में लोग डूबते चले गए। निम्न जाति के एक योद्धा फूल सिंह और पड़ोसी राज्य की राजकुमारी नौटंकी से प्रेम करता है। राजकुमारी नौटंकी अत्याचारी राजा हरि सिंह की इकलौती संतान है। राजकुमारी अपने राज्य से बाहर जाती तो अपने रथ से युवकों पर पत्थर फेंकती है जो बचने की कोशिश करता उसे माना जाता कि वह राजकुमारी को देख लिया। ऐसे में लोगों को मौत की सजा दी जाती। इसी बीच योद्धा फूल सिंह चोरी-चुपके राजकुमारी को देख लेता और पत्थर की मार से लहुलुहान हो जाता। राजकुमारी का दिल जीतने के लिए फूल सिंह स्त्री का रूप धारण कर महल में प्रवेश कर जाता है। दोनों के बीच प्रेम पनपता है। राजा योद्धा फूल सिंह को मौत की सजा सुनाता है। राजकुमारी नौटंकी अपने प्रेमी को बचाने में सफल हो जाती है। मंच पर रवि कुमार सिन्हा, प्रीति झा, इंदु घोष, आशुतोष कुमार, ओम प्रकाश आदि कलाकारों की भूमिका रही। नृत्य निर्देशन सोमा चक्रवर्ती का रहा।

चार दिवसीय रंगयात्रा शृंखला के अंतिम दिन नाटक 'बेटी वियोग' का मंचन हुआ। भिखारी ठाकुर लिखित नाटक और अमन कुमार के निर्देशन में नाट्य संस्था एकजुट के कलाकारों ने सशक्त अभिनय किया। मंच पर समीर राज, प्रदीप कुमार, रानी सिन्हा, रोबन कुमार, सोनू कुमार, धर्मेंद्र कुमार, मनीषा कुमारी, रानी सिन्हा ने अभिनय से नाटक को जीवंत कर दिया। गरीबी से तंग पिता चटक अपनी बेटी की शादी नहीं करा पाता है। गांव के एक पंडित की मदद से चटक बकलोलपुर गांव में झंटुल नामक एक बीमार और बूढ़े लेकिन धनी व्यक्ति से अपनी बेटी की शादी करा देता है। इसके बाद लड़की का रो-रो कर बुरा हाल हो जाता है। लड़की माता-पिता और समाज को दोषी ठहराती है, बावजूद धार्मिक नैतिकता और परंपरा की दुहाई देकर समाज उसे अपने पति के साथ जाने को विवश कर देता है। शादी के बाद बेटी विलाप करते हुए पिता से पूछती है कि आखिर उसका कसूर क्या है? उस समय समाज का क्रूर चेहरा दिखता है।

● नेहा कुमारी

पुरातात्विक स्थल चिरांद का निरीक्षण

सदर प्रखंड के चिरांद गांव में स्थित पुरातात्विक स्थल का राज्य के कला व संस्कृति मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने निरीक्षण किया। निरीक्षण के क्रम में पुरातत्व निदेशालय के निदेशक अतुल कुमार वर्मा भी साथ थे। इस दौरान उन्होंने खुदाई स्थल, खुदाई स्थल के बगल में निर्माणाधीन ऐतिहासिक प्राग पार्क एवं गंगा किनारे कटाव स्थल का भी निरीक्षण किया। उन्होंने रसिक शिरोमणि अयोध्या मंदिर का भी दर्शन किया। निरीक्षण के बाद उन्होंने ने कहा कि चिरांद नदी घाटी का विश्वस्तरीय दुर्लभ ऐतिहासिक स्थल है। जहां सभ्यता एवं संस्कृति का अवशेष मिलते रहे है। उन्होंने कहा कि चिरांद कुषाण काल में कितना विकसित था, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि 2000 हजार साल पहले भी यहां जल प्रबंधन एवं अटैच लैट्रिन बाथरूम था। जिसका अवशेष खुदाई में प्राप्त हुआ है। उन्होंने निर्माणाधीन ऐतिहासिक प्राग पार्क की चहारदीवारी को और ऊंचा करने का निर्देश विभाग के अधिकारियों को दिया। साथ ही खुदाई स्थल के आसपास और खुदाई कराने, साफ सफाई एवं खुदाई में मिले अवशेषों को संरक्षित करने का भी निर्देश दिया। इस अवसर पर चिरांद विकास परिषद के सदस्यों ने मंत्री को एक ज्ञापन दिया। जिसमे चिरांद में महोत्सव कराने की मांग की गयीं थी। मंत्री ने आश्वासन दिया कि जल्द ही जिलाधिकारी से स्थल चयन कर रिपोर्ट मांग कर इसकी घोषणा की जाएगी। इस अवसर पर मुख्य रूप से पूर्व विधायक ज्ञानचंद मांझी, भवन निर्माण विभाग के एजीएम, चिरांद विकास परिषद के सचिव श्रीराम तिवारी, रघुनाथ सिंह, राशेश्वर सिंह, हरिद्वार सिंह, गुप्तेश्वर नाथ पांडेय, मुरली मनोहर तिवारी, राधेश्याम चौरसिया आदि थे।

अपनी छपरा यात्रा के क्रम में मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि ने छपरा संग्रहालय का भी निरीक्षण किया।

छपरा में वॉलीबाल टूर्नामेंट का उद्घाटन

जिला स्कूल, छपरा के प्रांगण में आयोजित सारण जिला वॉलीबॉल लीग चौम्पियनशीप मैच का उद्घाटन कला संस्कृति एवं खेल विभाग के मंत्री कृष्ण कुमार ऋषि द्वारा किया गया।इस अवसर पर उन्होंने कहा कि राज्य की सरकार खिलाड़ियों को आगे बढ़ने में हर स्तर पर सहयोग कर रही है। हमारा राज्य खेल के मामले में अभी उतना आगे नहीं है। इसलिए खिलाड़ियों को लेकर सरकार सजग है। उन्होंने कहा कि कहने में यह संकोच नहीं है कि बिहार से अलग झारखंड खेल के मामले में हमसे भी आगे है। सरकार अब खिलाड़ियों को भोजन, भाड़ा व ठहरने की भी समुचित व्यवस्था कर दी है। आर्थिक रूप से कमजोर ग्रामीण क्षेत्र के युवाओं को सरकार हर स्तर पर सुविधा देकर प्रोत्साहित कर रही है। अमनौर के विधायक शत्रुघ्न तिवारी उर्फ चोकर बाबा ने कहा कि खेल समाज की दूरियों को मिटाता है। खेल से मेल और आपसी भाईचारा बढ़ता है।.

जिला वॉलीबॉल संघ के अध्यक्ष सह पूर्व विधायक विनय कुमार सिंह ने मंत्री को व विधायक को डॉ. हरेन्द्र सिंह ने बुके व शॉल से सम्मानित किया। कला संस्कृति विभाग के निर्देशक अतुल कुमार वर्मा को जिला वॉलीबॉल संघ के वरीय उपाध्यक्ष वेदप्रकाश उपाध्याय ने सम्मानित किया। पूर्व में सीपीएस के विधार्थियों ने बैंड बाजे के साथ मंत्री का स्वागत किया। मंच का संचालन प्रमोद कुमार सिंह ने किया। शिक्षिका प्रियंका सिंह ने अतिथियों का स्वागत गीत से किया। स्कूली छात्राओं ने भी मंत्री के स्वागत में नृत्य व गाना प्रस्तुत किया। मंच पर डीईओ राजकिशोर सिंह, विवेक कुमार सिंह, रंजीत कुमार सिंह, सचिव अमित सौरभ, यशपाल कुमार सिंह व अन्य थे।

माईम थिएटर ने भी की खूब बातें

बिहार की राजधानी पटना रंगमंच के लिए सबसे सुविधासम्पन्न और किफायती है। नाटक के लिए आधुनिक सुविधाओं से लैस प्रेमचन्द रंगशाला, भारतीय नृत्य कला मन्दिर, रवींद्र भवन आदि कई प्रेक्षागृह हैं। कालिदास रंगालय में किसी भी मौसम में नाटक होते ही रहते हैं। साथ ही राज्य के अन्य जिले भी रंगकर्मियों के जोश और जुनून से जगमगाता रहता है। आइए जून महीने में पटना समेत बिहार के विभिन्न जिलों में मंचित हुए नाटकों पर नजर डालतें हैं।

द मिस्ट्री आफ सिमेट्री

शुरुआत 3 जून को पार्टी जोन, गौशाला, सीतामढ़ी में कलाकक्ष, पटना द्वारा मैथिली शरण गुप्त लिखित यशोधरा का मंचन पल्लवी विश्वास के निर्देशन में हुआ। 9 को संत माइकल स्कूल परिसर, सतीस्थान, मसौढ़ी में 17वाँ दो दिवसीय मसौढ़ी संगीत नाट्य महोत्सव के पहले दिन भारती संगीत महाविद्यालय मसौढ़ी एवं मुंशी दास संगीत महाविद्यालय, मखदुमपुर के बच्चों द्वारा कत्थक, गायन,तबला, लोक नृत्य,लोकगीत, ठुमरी आदि की प्रस्तुति हुई। दूसरे दिन समापन प्रयास, पटना ने मिथिलेश सिंह लिखित एवं निर्देशित नाटक 'दशरथ माँझी' एवं जागृति कला मंच, मसौढ़ी ने सतीश मिश्र लिखित अरविंद कुमार निर्देशित नाटक 'त हम कुँवारे रहे' का मंचन हुआ। 10 को ही कालिदास रंगालय पटना में संगीत शिक्षायतन, पटना ने रबिन्द्र नाथ टैगोर लिखित 'राधिका' का मंचन यामिनी के निर्देशन में किया। 12 को जोगांजली, पटना ने प्रेमचन्द की कहानी 'सेवासदन' का मंचन सुबंती बनर्जी के निर्देशन में किया इसका नाट्य रूपांतरण अजित कुमार ने किया। 13 को नॉर्थ कोलकाता मिथिला जागृति मंच ने अभिषेक चौहान लिखित कृष्ण कुमार झा निर्देशित नाटक 'द कुरियन मैन' का मंचन किया।

शशि फाउण्डेशन, पटना ने कला भवन छोटकी कोपा प्रांगण में प्रेम कुमार 'पागल' लिखित हॉबीन्स कुमार निर्देशित नाटक 'दामिनी' का मंचन किया। शिक्षायतन प्रांगण, पटना में यामिनी लिखित नितेश कुमार निर्देशित नाटक 'लीला' का मंचन हुआ। 18 को दिनकर कला भवन, बेगूसराय में मॉडर्न थियेटर फाउंडेशन, बेगूसराय ने भारतेंदु हरिश्चंद्र लिखित परवेज यूसुफ निर्देशित नाटक 'अंधेर नगरी' का मंचन किया। वहीं कालिदास रंगालय पटना में सवेरा जन उत्थान सामाजिक संस्था, पटना द्वारा आयोजित आर के गोल्डी नाट्य महोत्सव का पर्दा शशि सरोजनी रंगमंच, सहरसा द्वारा रितेश परमार लिखित कुंदन वर्मा निर्देशित नाटक 'कैंडल मार्च' से उठा। 19 को शशि फाउंडेशन, नौबतपुर, पटना द्वारा प्रेम कुमार पागल लिखित हॉबीन्स कुमार निर्देशित नाटक 'दामिनी' के मंचन से नाट्योत्सव का समापन हुआ। 23 को उत्क्रमित मध्य विद्यालय जिल्ला पुनर्वास, मटियानी, बेगूसराय में नवकिरण आर्ट फाउंडेशन, बेगूसराय ने अनीश अंकुर एवं प्रवीण कुमार गुंजन लिखित नाटक 'उदास मत हो चिन्नी' का मंचन संतोष कुमार राही एवं अवध कुमार ठाकुर के निर्देशन में हुआ।

कालिदास रंगालय में बिहार आर्ट थियेटर, पटना द्वारा आयोजित अपने 57 वें स्थापना दिवस 25 से 29 पांच दिवसीय नाट्योत्सव-2018 का पर्दा लोकपंच, पटना द्वारा नीरू कुमारी लिखित मनीष महिवाल निर्देशित नाटक 'बेटी पढ़कर क्या करेगी' के मंचन के साथ उठा। 26 को कृष्णायन, पटना द्वारा कमलेश्वर लिखित चंदना घोष निर्देशित नाटक 'चारुलता' का मंचन हुआ। 27 को रूपाक्षर, पटना द्वारा सुनील परेश लिखित एवं निर्देशित नाटक 'असाध्य वीणा' का मंचन हुआ। 28 को मॉडर्न माईम सेंटर, कोलकाता द्वारा कमल नस्कर लिखित एवं निर्देशित माईम शो 'एपिक नाईट' की प्रस्तुति हुई। 29 को समापन हज्जु म्यूजिकल थियेटर, पटना द्वारा मच्छिन्द्र मोरे लिखित सुरेश कुमार हज्जु निर्देशित हिजड़ों की जिंदगी पर आधारित नाटक 'जानेमन' के मंचन से हुआ। 30 को बिहार नाट्यकला प्रशिक्षणालय, पटना के प्रशिक्षुओं द्वारा राज पटेल लिखित विवेक कुमार तिवारी निर्देशित 'द मिस्ट्री ऑफ सिमेट्री' का मंचन हुआ साथ ही किसान भवन, जयनगर, मधुबनी में मधुबनी इप्टा द्वारा वागीश कुमार झा लिखित अनिल मिश्रा निर्देशित नाटक 'महाभारत एक्सटेंशन' का मंचन हुआ।

यशोधरा

● राजन कुमार सिंह

बादल

अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध

सखी ! बादल थे नभ में छाये
बदला था रंग समय का
थी प्रकृति भरी करूणा में
कर उपचय मेघ निश्चय का।

वे विविध रूप धारण कर
नभ-तल में घूम रहे थे
गिरि के ऊँचे शिखरों को
गौरव से चूम रहे थे।

वे कभी स्वयं नग सम बन
थे अद्भुत दृश्य दिखाते
कर कभी दुंदभी-वादन
चपला को रहे नचाते।

वे पहन कभी नीलाम्बर
थे बड़े मुग्ध कर बनते
मुक्तावलि बलित अघट में
अनुपम बितान थे तनते।

बहुश:-खण्डों में बँटकर
चलते फिरते दिखलाते
वे कभी नभ पयोनिधि के
थे विपुल पोत बन पाते।

वे रंग बिरंगे रवि की
किरणों से थे बन जाते
वे कभी प्रकृति को विलसित
नीली साड़ियां पिन्हाते।

वे पवन तुरंगम पर चढ़
थे दूनी-दौड़ लगाते
वे कभी धूप छाया के
थे छविमय-दृश्य दिखाते।

घन कभी घेर दिनमणि को
थे इतनी घनता पाते
जो द्युति-विहीन कर दिन को
थे अमा-समान बनाते।

मुद्रक : लेज़र प्रिंटर्स, काजीपुर, पटना - 4, फोन - 9334116085
laserpatna@gmail.com